Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 1

– Save This Page as a PDF–

अच्छे सामरी का दृष्टान्त

लूका १०:२५-३७

खुदाई: इस दृष्टांत में कौन किसकी परीक्षा ले रहा है? क्या टोरा के विशेषज्ञ को लगता है कि उसने पद २८ में दी गई परीक्षा पास कर ली है? ऐसा कैसे? यीशु सीधे उत्तर के बजाय दृष्टान्त से उत्तर क्यों देते हैं? कोई याजक और लेवी के कार्यों को कैसे उचित ठहरा सकता है (लैव्यव्यवस्था २१:१-३ और गिनती १९:११-२२ देखें)? यहूदियों और सामरियों के बीच विभाजन को देखते हुए, इस कहानी में कथानक में क्या असामान्य बात है?

चिंतन: इस दृष्टांत में आप सबसे अधिक किसके साथ पहचान रखते हैं? क्यों? आपके जीवन में अच्छे सामरी कौन रहे हैं? इस सप्ताह आपको किसके प्रति अच्छा सहायक बनने की आवश्यकता है? जब सड़क पर कोई आपके पास मदद की ज़रूरत के लिए आता है तो आप क्या करते हैं? अब जब आपने यह दृष्टांत पढ़ लिया है, तो आप क्या कहेंगे कि आपका पड़ोसी कौन है?

अच्छे सामरी के दृष्टान्त का एक मुख्य बिंदु यह है कि हम स्वयं को उचित नहीं ठहरा सकते हैं और अच्छे कार्यों से अनन्त जीवन अर्जित नहीं कर सकते हैं।

लूका ७:४०-४३ में हमने एक व्यापक धार्मिक चर्चा के हिस्से के रूप में दो देनदारों के दृष्टांत को देखा (देखें Ef – पापी जीवन जीने वाली एक महिला द्वारा यीशु का अभिषेक)। लूका १८:१८-३० के एक समानांतर परिच्छेद में हम एक ऐसे ही मामले का अध्ययन करेंगे जहां ऊंट और सुई का दृष्टांत एक बहुत बड़े धार्मिक नाटक के केंद्र में है (देखें Il – अमीर युवा शासक)। इन दोनों दृष्टांतों में दृष्टांत की संक्षिप्तता और संवाद की लंबाई हमें दृष्टांत को संवाद का हिस्सा मानने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि, यहाँ अच्छे सामरी का दृष्टांत धार्मिक शिक्षा में ही अंतर्निहित है।

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 2



सेटिंग इस विशेष दृष्टांत की व्याख्या में काफी
अंतर लाती है। लूका ७:४०-४३ और १८:१८-३० में दृष्टांत की संक्षिप्तता और संवाद की लंबाई स्वाभाविक रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि दृष्टांत शिक्षण का हिस्सा है। हालाँकि, यहाँ यह दृष्टांत काफी लंबा है और आसपास का संवाद अपेक्षाकृत छोटा है। इस प्रकार, पाठक की संवाद को नजरअंदाज करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यदि हम ऐसा करते हैं, तो यह दृष्टांत जरूरतमंद लोगों तक पहुंचने के लिए केवल एक नैतिक उपदेश बनकर रह जाता है। दरअसल, सदियों से औसत आस्तिक ने दृष्टांत को लगभग विशेष रूप से इसी तरह से समझा है। लेकिन सतह के नीचे एक बहुत गहरा धार्मिक मुद्दा है। क्या आप स्वर्ग जाने का रास्ता अपना सकते हैं?

येशुआ और टोरा के विशेषज्ञ के बीच संवाद आठ भाषणों और सात दृश्यों से बना है। आठ भाषण बहस के आठ सवालों के साथ दो दौर में आते हैं। प्रत्येक दौर में दो प्रश्न और दो उत्तर होते हैं। सातों दृश्यों में से प्रत्येक की औपचारिक संरचना समान है।

पहला दौर: यह संवाद व्युत्क्रम सिद्धांत का उपयोग करता है। पहले और चौथे भाषण करो और जियो के विषय पर हैं, आंतरिक दो तोरा के विषय पर हैं।

भाषण एक (वकील): एक अवसर पर टोरा (ग्रीक: नोमिकोस) का एक विशेषज्ञ यीशु का परीक्षण करने के लिए आराधनालय में बैठे लोगों में से खड़ा हुआ। ग्रीक में उसे वकील कहा जाएगा। यहां, इसका मतलब यहूदी ब्यबस्था का विशेषज्ञ है, जिसमें लिखित टोरा और मौखिक ब्यबस्था दोनों शामिल हैं (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था)। रब्बी, उन्होंने पूछा, अनंत जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए (लूका १०:२५)? यह परीक्षा थी। ग्रीक शब्द करो एओरिस्ट काल में है, इसलिए अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार का कार्य करने पर जोर दिया जाता है।

भाषण दो (यीशु): एक अच्छे रब्बी की तरह, यीशु ने उसके प्रश्न का उत्तर एक प्रश्न के साथ दिया, और उसे धर्मग्रंथों की ओर निर्देशित किया: टोरा में क्या लिखा है? उसने जवाब दिया। आप इसे कैसे पढ़ते हैं, अर्थात् क्या मैं आपके अधिकार को स्पष्टीकरण के साथ सुन सकता हूँ (लूका १०:२६)?

भाषण तीन (वकील): टोरा के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया: “अपने ईश्वर को अपने पूरे दिल

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 3

से, अपनी पूरी आत्मा से, अपनी पूरी ताकत से और अपने पूरे दिमाग से प्यार करो; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो” (लूका १०:२७)। विशेषज्ञ के उत्तर में तानाख के दो अंश शामिल थे। सबसे पहले, व्यवस्थाविवरण ६:५ जो शेमा था और कहा जाता है क्योंकि यह शुरू होता है: सुनो (शेमा) हे इस्राएल। एक धर्मनिष्ठ यहूदी प्रत्येक दिन दो बार शेमा दोहराता था। शेमा में तीन पूर्वसर्गीय वाक्यांश ईश्वर के प्रति प्रेम की प्रतिक्रिया का वर्णन करते हैं। इनमें हृदय (भावनाएँ), आत्मा (चेतना), और शक्ति (प्रेरणा) शामिल हैं। वकील की प्रतिक्रिया में दूसरा अंश लैव्यव्यवस्था १९:१८ में पाया जाता है, और रोमियों १३:९, गलातियों ५:१४ और याकूब २:८ में भी देखा जाता है।

भाषण चार (यीशु): आपने सही उत्तर दिया है, येशुआ ने उत्तर दिया। ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे (लूका १०:२८)। वकील ने अनंत जीवन के बारे में पूछा, लेकिन मसीहा ने चर्चा को संपूर्ण जीवन तक बढ़ा दिया। यूनानी पाठ का तत्काल भविष्य है; दूसरे शब्दों में, ऐसा करो और तुम जीवित हो जाओगे। ग्रीक क्रिया ‘करो‘ एक वर्तमान अनिवार्य शब्द है जिसका अर्थ है ‘करते रहना’। वकील ने एक विशिष्ट सीमित आवश्यकता की परिभाषा का अनुरोध किया – मैंने जो किया है वह मुझे विरासत में मिलेगा। . . मसीह का उत्तर एक खुली जीवन-शैली के आदेश में दिया गया है जिसके लिए ईश्वर और लोगों के लिए असीमित और अयोग्य प्रेम की आवश्यकता होती है। यह ऐसा है मानो प्रभु कह रहे हों, “यदि आप अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए कुछ करना चाहते हैं? बहुत अच्छा, बस अपने अस्तित्व की समग्रता से ईश्वर और अपने पड़ोसी से निरंतर प्रेम करते रहो।” जिसे, टोरा की ही तरह, प्राप्त करना एक असंभव मानक है। तो मूल रूप से, यीशु वकील से कह रहे थे, यदि आप अपना उद्धार अर्जित करने के लिए कुछ करना चाहते हैं, तो सिद्ध बनें। यह एक अप्राप्य कार्य था।

दूसरा दौर: बहस का पहला दौर समाप्त होता है। लेकिन टोरा के विशेषज्ञ ने यह आशा नहीं छोड़ी थी कि वह अनन्त जीवन के लिए अपना रास्ता स्वयं अर्जित कर सकता है। टोरा उद्धृत किया गया था। अब उसे कुछ कमेंटरी, कुछ मिडरैश की जरूरत थी। वह अडोनाई के बारे में जानता था, लेकिन “यह पड़ोसी” कौन था जिसे उसे अपने समान प्यार करना चाहिए? उसे कुछ परिभाषा की आवश्यकता थी, शायद एक सूची की। यदि सूची बहुत लंबी नहीं है तो वह इसकी मांगों को पूरा करने में सक्षम हो सकता है। नतीजतन, वह बहस के दूसरे दौर की शुरुआत करते हैं।

भाषण पाँच (वकील): लेकिन वह खुद को सही ठहराना चाहता था, इसलिए उसने यीशु से पूछा, “और मेरा पड़ोसी कौन है” (लूका १०:२९)? टोरा में विशेषज्ञ बस कुछ करने और अनन्त जीवन प्राप्त करने की आशा करता है। वह मसीहा, जो मेरा पड़ोसी है, से जो प्रश्न पूछता है, वह शायद इस आशा से पूछा जाता है कि प्रभु उत्तर देंगे, “तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारे मित्र।” तब वकील उत्तर देगा, “मैंने उन सब से पूर्ण प्रेम किया है।” तब उसकी आशा यह होगी कि यीशु उसकी प्रशंसा करते हुए कहेगा, “आपने सचमुच तोरा को पूरा किया है।” तब वकील अपने अच्छे कार्यों की प्रशंसा करते

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 4

हुए चला गया। समस्या यह थी कि टोरा के विशेषज्ञ ने यह नहीं समझा कि केवल अनुग्रह और दया से ही हम अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। उसे पता नहीं था कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। वह वास्तव में अनुग्रह और दया से बिल्कुल अलग किसी चीज़ के द्वारा जीता था, जो कि उसके स्वयं के इरादे और खुद को ईश्वर के सामने एक धर्मी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता से था। दूसरे शब्दों में, इस व्यक्ति ने सोचा कि उसके अच्छे कार्य इब्राहीम के पक्ष में उसका स्थान सुरक्षित कर सकते हैं।

यीशु ने एक दृष्टांत के साथ उत्तर देते हुए कहा: एक [निश्चित] आदमी यरूशलेम से यरीहो जा रहा था, जब लुटेरों ने उस पर हमला किया (लूका १०:३०ए)। कहानी में जानबूझकर उस व्यक्ति का नाम नहीं बताया गया है, लेकिन यहूदी दर्शक स्वाभाविक रूप से यह मान लेंगे कि यात्री एक यहूदी था। येरुशलायिम से जेरिको तक की सड़क १७ मील में लगभग ३,००० फीट नीचे उतरती है। यह यात्रा करने के लिए एक खतरनाक सड़क थी क्योंकि इसके खड़ी, घुमावदार रास्ते में लुटेरे छुपे हुए थे। साहित्यिक रूप सात-दृश्य परवलयिक गाथागीत है।



दृश्य १: लुटेरे। उन्होंने उसके कपड़े उतार
दिए, उसे पीटा और उसे अधमरा छोड़कर चले गए (लूका १०:३०बी)। रब्बियों ने मृत्यु के चरणों की पहचान की। अर्ध मृत वाक्यांश का अर्थ यहाँ मृत्यु के निकट, या मृत्यु के निकट है। स्पष्टतः वह व्यक्ति बेहोश था और इसलिए अपनी पहचान नहीं कर सका। तनाव पैदा करने के लिए विवरणों का कुशलता से निर्माण किया गया है जो नाटक का मूल है। किसी भी यात्री की पहचान उसकी वाणी से की जा सकती है। कुछ त्वरित प्रश्न और उसकी भाषा या बोली से उसकी पहचान हो जाएगी। लेकिन अगर वह बेहोश हो तो क्या होगा? उस स्थिति में किसी को अजनबी के कपड़ों पर एक नज़र डालने की ज़रूरत होगी। लेकिन क्या होगा अगर सड़क के किनारे खड़े आदमी को नंगा कर दिया जाए? इस प्रकार वह एक जरूरतमंद इंसान बनकर रह गया। वह किसी के जातीय या धार्मिक समुदाय का नहीं था! यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे लुटेरे घायल अवस्था में सड़क के किनारे छोड़ गए। दृष्टान्तों में प्रश्न यह बनता है कि इस व्यक्ति को कौन रोकेगा और सहायता प्रदान करेगा?

दृश्य २: याजक। अब संयोग से, एक पादरी उसी रास्ते से जा रहा था, और जब उसने उस आदमी को देखा, तो वह दूसरी तरफ से गुजर गया (लूका १०:३१)। याजक, या सदूकी, हारून

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 5

का वंशज, जो मंदिर में बलिदान कर्तव्यों का पालन करता था, निश्चित रूप से सवारी कर रहा था क्योंकि वह उच्च वर्ग में से था। गरीब पैदल चलते हैं। आम तौर पर बाकी सभी लोग, विशेषकर उच्च वर्ग, हमेशा सवारी करते थे। इस प्रकार यह दृष्टांत हमें एक याजक की तस्वीर देता है जो सवारी कर रहा है, घायल आदमी को देख रहा है (संभवतः कुछ दूरी पर), और फिर अपनी सवारी को सड़क के दूसरी ओर ले जाता है और अपने रास्ते पर चलता रहता है। याजकों का मानना था कि इस स्थिति में ऐसे घृणित व्यक्ति को दी गई मदद स्वयं ईश्वर की मांग के विरुद्ध होगी क्योंकि एडोनाई पापियों से घृणा करता था (सिराक १२:१-७)। इतना ही नहीं, इस बात की भी संभावना थी कि खाई में बैठा यह पापी यहूदी न हो, इससे भी बुरी बात यह थी कि वह आदमी मर चुका था। यदि ऐसा है, तो उसके साथ संपर्क करने से कोहेन अपवित्र हो जाएगा, जिसने दशमांश एकत्र किया, वितरित किया और खाया। यदि उसने स्वयं को अशुद्ध किया तो वह इनमें से कोई भी कार्य नहीं कर पाएगा, और उसके परिवार और नौकरों को भी उसके कार्यों का परिणाम भुगतना पड़ेगा।

रुकने और सहायता प्रदान करने या पापी से दूर रहने के याजक के फैसले का एक और हिस्सा यह तथ्य था कि वह यरूशलेम से जेरिको जा रहा था। बड़ी संख्या में याजक दो सप्ताह की अवधि के लिए मंदिर में सेवा करते थे लेकिन जेरिको में रहते थे। येरुशलायिम को छोड़कर जेरिको जाने वाले किसी भी याजक को स्वाभाविक रूप से माना जाएगा कि उसने अपनी सेवा की अवधि पूरी कर ली है और अपने घर जा रहा है। हमें बताया गया है कि याजकों द्वारा मंदिर में प्रतिदिन दो बार अनुष्ठानिक शुद्धिकरण किया जाता था। सेवा के दौरान सुबह और शाम की भेंट के समय घंटा बजाया जाता था। उस समय महायाजक सभी अशुद्ध लोगों को महिलाओं के दरबार में कांस्य वेदी के सामने खड़ा करता था (देखें Nc2– पूर्वी द्वार और महिलाओं का दरबार)। अशुद्ध याजकों को भी वहाँ खड़ा किया जाता था अस्वच्छता को स्वीकार करने के लिए शर्म की बात है (मिश्ना तामिद ४, ६)। यह कल्पना करना आसान है कि अगर कोहेन को धार्मिक अशुद्धता का सामना करना पड़ा तो उसे कितना अपमान महसूस होगा। शायद मंदिर में पूजा के नेता के रूप में अपने दो सप्ताह पूरे करने के बाद, क्या वह अपमानित होकर लौटेंगे और अन्य सभी अशुद्ध पापियों के साथ महिलाओं के दरबार में खड़े होंगे? इस प्रकार, याजक की दुर्दशा को समझना मुश्किल नहीं है क्योंकि वह अचानक सड़क के किनारे बेहोश आदमी के रूप में सामने आया।

अधिक विशेष रूप से, कोहेन अपवित्र हुए बिना किसी मृत शरीर के चार हाथ से अधिक करीब नहीं जा सकता था, और उस व्यक्ति की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए उसे निश्चित रूप से उससे अधिक करीब जाना होगा। फिर, अगर वह मर गया होता, तो याजक शायद उसके कपड़े फाड़ देता। और इससे मौखिक ब्यबस्था का उल्लंघन होता, जिसमें उसे मूल्यवान चीज़ों को नष्ट न करने का आदेश दिया गया था। याजक की पत्नी, नौकर और सहकर्मियों ने घायल आदमी की उपेक्षा की सराहना की होगी और फरीसियों ने उसे रोकने में उचित पाया होगा, फिर भी आगे बढ़ने का हकदार होगा। नतीजतन, उसके लिए जीवन क्या करें और क्या न करें की प्रणाली में व्यवस्थित हो गया था ts।

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 6

दृश्य ३: लेवी। इसी प्रकार, एक लेवी त्ज़ियॉन से यरीहो तक याजक के पीछे-पीछे गया। जब वह उस स्थान पर आया, और घायल मनुष्य को देखा, तो वह भी दूसरी ओर से चला गया (लूका १०:३२)। लेवी लेवी के वंशज थे जिन्होंने मंदिर की देखरेख की और विभिन्न बलिदान कर्तव्यों में याजकों की सहायता की। लेवी को पता था कि उसके सामने एक याजक था और वह घायल आदमी के पास से गुजरा था क्योंकि व्यक्ति १७ मील में से अधिकांश के लिए काफी दूरी तक आगे का रास्ता देख सकता है। इसके अलावा, उस सड़क पर चलने वाले को इस बात में बेहद दिलचस्पी होगी कि उस पर और कौन है। आपका जीवन इस पर निर्भर हो सकता है। रेगिस्तान शुरू होने से ठीक पहले आखिरी गाँव के किनारे पर एक दर्शक से पूछा गया एक प्रश्न; दूसरी ओर से आ रहे यात्री के साथ संक्षिप्त बातचीत; सड़क के किनारे नरम धरती पर ताज़ा पटरियाँ जहाँ आदमी और जानवर चलना पसंद करते हैं; सामने साफ़ रेगिस्तानी हवा में एक वस्त्रधारी आकृति की झलक; ये सभी लेवी यात्री के लिए ज्ञान के संभावित स्रोत थे।

इसलिए लेवी को इस विवरण को जानना कहानी के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह याजक जितने नियमों से बंधा नहीं था। लेवी को केवल अपने मंदिर की गतिविधियों के दौरान अनुष्ठानिक स्वच्छता का पालन करने की आवश्यकता थी। इस प्रकार, वह सहायता दे सकता था, और यदि वह व्यक्ति मर गया था या उसकी बाहों में मर गया था, तो उसके लिए परिणाम उतने गंभीर नहीं होंगे। हमें बताया गया है कि लेवी उस स्थान पर आया जहां वह आदमी पड़ा था। लेवी, याजक की तरह, यह पता नहीं लगा सका कि घायल व्यक्ति पड़ोसी था या नहीं। शायद यही कारण है कि उन्होंने उनसे संपर्क किया। शायद वह बात कर सके? पता न चलने पर वह चल बसा। तो याजक के विपरीत, ऐसा लगता है कि लेवी ने मौखिक ब्यबस्था के निषेध को चार हाथ पार कर लिया है और करीब से देखने पर अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट किया है। फिर उसने सहायता न देने का निर्णय लिया और दूसरी ओर चला गया।

अपवित्रता का भय कोई प्रबल उद्देश्य नहीं रहा होगा। हालाँकि, लुटेरों का डर रहा होगा। अधिक संभावना यह है कि यह उच्च श्रेणी के याजक का उदाहरण है जिसने उसे रोका। वह न केवल यह कह सकता था, “यदि आगे के याजक ने कुछ नहीं किया, तो मैं, एक मात्र लेवी, अपने आप को परेशान क्यों करूं,” बल्कि इसे अपने वरिष्ठ के प्रति एक प्रकार के अपमान के रूप में भी देखा जा सकता है। याजक पर सूक्ष्मता से आरोप लगाने से कहीं अधिक रुकने से “हृदय की कठोरता”, लेवी भी याजक की टोरा की व्याख्या की आलोचना कर रहा होगा! जब ऊंचे याजक ने टोरा की एक तरह से व्याख्या की, तो क्या लेवी को उसके फैसले पर सवाल उठाना चाहिए? मुश्किल से।

लेवी याजक की तुलना में निम्न सामाजिक स्तर का था और संभवत पैदल चल सकता था। किसी भी स्थिति में, वह न्यूनतम चिकित्सा सहायता प्रदान कर सकता था, भले ही उसके पास घायल व्यक्ति को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का कोई रास्ता न हो। अगर वह चल रहा होता तो हम कल्पना कर सकते हैं कि वह खुद से कह रहा है, “मैं उस आदमी को सुरक्षित नहीं ले जा सकता और क्या मैं पूरी रात यहीं बैठा रहूंगा और इन्हीं लुटेरों के हमले का जोखिम उठाऊंगा?” किसी भी स्थिति में, वह याजक का अनुसरण करते हुए दृश्य

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 7

से गायब हो जाता है।

दृश्य ४: सामरी। परन्तु एक सामरी वहाँ आया जहाँ वह आदमी था (लूका १०:३३ए)। सामरी शब्द वाक्य में सशक्त स्थिति है। येशुआ ने जानबूझकर अपने नायक के लिए एक बाहरी व्यक्ति और उस पर नफरत करने वाले व्यक्ति को चुना, ताकि यह संकेत दिया जा सके कि पड़ोसी होना राष्ट्रीयता या नस्ल का मामला नहीं है। यहूदियों और सामरियों की आपसी नफरत यूहन्ना ४:९ और ८:४८ जैसे अंशों में स्पष्ट है। सुलैमान की मृत्यु के बाद उसके बेटे रहूबियाम (प्रथम राजा १२) की मूर्खता के कारण यूनाइटेड किंगडम विभाजित हो गया। दस उत्तरी जनजातियों ने एक राष्ट्र का गठन किया जिसे इज़राइल, एप्रैम, या (ओमरी द्वारा निर्मित राजधानी शहर के बाद) सामरिया के नाम से जाना जाता है।

७२२ ईसा पूर्व में सामरिया अश्शूरियों के अधीन हो गया, और प्रमुख नागरिक, समाज के नेता, पूरे असीरियन साम्राज्य में तितर-बितर हो गए। उसी समय पूरे साम्राज्य में असीरियन नागरिकों को सामरिया में लाया गया। आख़िरकार उन्होंने अंतर्विवाह कर लिया और उनके बच्चे यहूदा के दक्षिणी साम्राज्य की नज़र में “आधी नस्ल” बन गए।

यहूदियों के बाबुल में निर्वासन से लौटने के बाद, सामरियों ने सबसे पहले मंदिर के पुनर्निर्माण में मदद करने की मांग की। लेकिन जब उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया, तो उन्होंने इसके निर्माण में बाधा डालने की कोशिश की (एज्रा ४-६; नहेमायाह २-४)। सामरी लोगों ने बाद में गेरिज़िम पर्वत पर अपना मंदिर बनाया (युहन्ना ४:२०-२१), लेकिन हस्मोनियन नेता योचानान हिरकेनस के नेतृत्व में, यहूदियों ने १२८ ईसा पूर्व में इसे नष्ट कर दिया। यहूदी और सामरी शत्रुता इतनी महान थी कि यीशु के विरोधी उसके बारे में इससे बुरा कुछ भी नहीं कह सकते थे: क्या हम यह कहने में सही नहीं हैं कि आप एक सामरी और दुष्टात्मा से ग्रस्त हैं (यूहन्ना ८:४८)?

जैसे-जैसे वह यात्रा करता गया, वह वहीं आया
जहां वह आदमी था; और जब उस ने उसे देखा, तो उस को उस पर दया आई। जैसा कि लूका १४:१८-२० (पहला, दूसरा, फिर भी दूसरा) और लूका २०:१०-१४ (एक नौकर, दूसरा नौकर, मेरा बेटा) में हम तीन पात्रों की प्रगति के साथ काम कर रहे हैं। याजक और लेवी यीशु की उपस्थिति के बाद दर्शकों को एक यहूदी आम आदमी की उम्मीद होगी। न केवल

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 8

याजक-लेवी-आम आदमी एक प्राकृतिक अनुक्रम है, बल्कि ये वही तीन वर्ग के लोग हैं जो मंदिर में कार्य करते हैं। जब याजकों और लेवियों का प्रतिनिधिमंडल यरूशलेम गया और अपने निर्दिष्ट दो सप्ताह के बाद लौट आया, तो “इस्राएल का प्रतिनिधिमंडल” भी उनके साथ सेवा करने के लिए उनके साथ गया। उनकी सेवा शर्तों के बाद, कोई भी स्वाभाविक रूप से उम्मीद करेगा कि तीनों घर लौटने की राह पर होंगे। मसीहा के दृष्टांत के श्रोता पहले और दूसरे पर ध्यान देंगे और तीसरे की आशा करेंगे। हालाँकि, क्रम बाधित है। दर्शकों को बहुत आश्चर्य और निराशा हुई, सड़क पर जा रहा तीसरा आदमी नफरत करने वाले सामरी लोगों में से एक है। मिश्ना घोषणा करता है, “जो सामरियों की रोटी खाता है, वह सूअर का मांस खाने वाले के समान है” (मिश्ना शेबीथ ८:१०)। सामरियों को आराधनालयों में सार्वजनिक रूप से शाप दिया जाता था, और प्रतिदिन प्रार्थनाएँ की जाती थीं कि उन्हें अनन्त जीवन न मिल सके। तो यीशु ने वास्तव में एक कच्ची तंत्रिका पर प्रहार किया। वह एक महान यहूदी के बारे में एक कहानी बता सकता था जो सड़क के किनारे घायल व्यक्ति की मदद कर रहा था। बल्कि, हमारे पास नायक के रूप में नफरत करने वाला सामरी है।

ग्रीक शब्द करुणा (स्प्लैंचनिज़ोमाई) का मूल शब्द इनार्ड्स (स्प्लेनचॉन) है। यह ग्रीक और सेमिटिक कल्पना दोनों में एक बहुत मजबूत शब्द है। दरअसल, घायल व्यक्ति के प्रति सामरी की गहरी प्रतिक्रिया थी। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सामरी गैर-यहूदी नहीं है। वह उसी टोरा से बंधा हुआ था जिसने उसे यह भी बताया था कि अपने ईश्वर को अपने पूरे दिल से, अपनी पूरी आत्मा से, अपनी पूरी ताकत से और अपने पूरे दिमाग से प्यार करो; और, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो (व्यवस्थाविवरण ६:५; लैव्यव्यवस्था १९:१८)। वह यहूदिया में यात्रा कर रहा था, इसलिए याजक और लेवी की तुलना में उसके लिए यह कम संभावना थी कि गुमनाम घायल व्यक्ति को उसका पड़ोसी माना जाएगा। हालाँकि, इसके बावजूद, उन्होंने ही कार्रवाई की।

जैसे-जैसे हम दृश्यों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, दृष्टान्त में स्पष्ट प्रगति होती है। याजक ही सड़क से नीचे चला गया। लेवी उस स्थान पर आया। हालाँकि, सामरी वहीं आ गया जहाँ वह आदमी था। उसे भी संदूषण का खतरा है, जो अगर झेला जाता है, तो उसके जानवरों और माल तक फैल जाता है। कम से कम एक जानवर और संभवतः अधिक (जैसा कि हम देखेंगे), और शायद कुछ आपूर्ति के साथ, वह उन्हीं लुटेरों के लिए एक प्रमुख लक्ष्य होगा जो अभी किसी याजक या लेवी का आदर कर सकता है, परन्तु घृणित सामरी पर हमला करने में उसे कोई झिझक नहीं होगी।

लेकिन सामरी को एक फायदा था। एक बाहरी व्यक्ति के रूप में वह एक यहूदी आम आदमी की तरह याजक और लेवी के कार्यों से प्रभावित नहीं होगा। हम नहीं जानते कि सामरी किस ओर जा रहा था। यदि वह ऊपर की ओर जा रहा होता तो वह याजक और लेवी को पार कर जाता और इसलिए उन्हें उनकी निष्क्रियता का भली-भाँति एहसास होता। लेकिन अगर वह भी नीचे की ओर यात्रा कर रहा था, तो वह सबसे अधिक संभावना यह देख सकता था कि उससे आगे कौन है क्योंकि कोई व्यक्ति काफी दूरी तक आगे का रास्ता देख सकता है। परिणामस्वरूप,

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 9

कुछ हद तक लेवी की तरह, वह कह सकता था, “यह बेहोश आदमी शायद एक यहूदी है और इन यहूदियों ने उसे मरने के लिए छोड़ दिया है। मुझे इसमें क्यों शामिल होना चाहिए?” जैसा कि हम देखेंगे, यदि वह इसमें शामिल हुआ, तो उसे उसी यहूदी के परिवार और दोस्तों से प्रतिशोध का जोखिम उठाना पड़ा, जिसकी वह सहायता कर रहा था। इस सब के बावजूद, सामरी को घायल व्यक्ति पर गहरी दया आई और उसने तुरंत कार्रवाई की।

दृश्य ५: प्राथमिक चिकित्सा। उस आदमी को देखते ही, वह तुरंत उसके पास गया और उसके घावों पर तेल और शराब डालकर पट्टी बाँध दी (लूका १०:३३बी-३४ए)। यहाँ सामरी ने प्राथमिक उपचार की पेशकश की जो लेवी देने में विफल रहा। उसे पहले घावों को तेल से साफ और नरम करना था, फिर शराब से कीटाणुरहित करना था और अंत में अपने घावों पर पट्टी बांधनी थी। घावों पर पट्टी बांधना वह कल्पना है जिसका उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए कार्य करते समय करते हैं। परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा, “मैं तुम्हें फिर से स्वस्थ कर दूंगा और तुम्हारे घावों को ठीक कर दूंगा” (यिर्मयाह ३०:१७)। प्रतीकवाद स्पष्ट है। अडोनाई वह है जो बचाता है, और यहाँ, उसके उद्धार का एजेंट आश्चर्यजनक रूप से एक सामरी है, यीशु की तरह, एक अस्वीकृत बाहरी व्यक्ति।

दृश्य ६: सराय तक परिवहन। तब वह उस मनुष्य को अपने गधे पर
बिठाकर सराय में ले गया, और उसकी देखभाल करने लगा (लूका १०:३४ख)। यहां सामरी ने एक सेवक की विनम्र स्थिति ली (फिलिप्पियों २:७) और यीशु की तरह ही उस व्यक्ति को सुरक्षा की ओर ले गया। निकट पूर्वी समाज में सवारों और सवारी करने वाले जानवरों के नेताओं के बीच सामाजिक अंतर महत्वपूर्ण है। अपने आश्चर्य और अपमान के कारण, हामान (जिसे सवार होने की उम्मीद थी) ने खुद को उस घोड़े का नेतृत्व करते हुए पाया जिस पर उसका दुश्मन मोर्दकै सवार था (एस्थर बीई पर मेरी टिप्पणी देखें – उस रात राजा सो नहीं सका)। सराय में जाने और घायल आदमी की जरूरतों को पूरा करने के लिए रात भर वहीं रहने की उनकी इच्छा, यीशु के निस्वार्थ प्रेम का एक और कार्य है। यह सराय रेगिस्तान के बीच में नहीं रही होगी। तो स्वाभाविक धारणा यह है कि सामरी उस

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 10

व्यक्ति को पहाड़ी से जेरिको तक ले गया। इसलिए, सराय या तो एक समुदाय में है या किसी एक के संपर्क में है।

सामरी ने, खुद को पहचानने की अनुमति देकर, घायल व्यक्ति के परिवार से बदला लेने के लिए उसे ढूंढने का गंभीर जोखिम उठाया! आखिर और कौन है वहां? निकट पूर्वी किसान समाज की समूह मानसिकता इस बिंदु पर पूरी तरह से अतार्किक निर्णय देती है। जो अजनबी किसी दुर्घटना में खुद को शामिल करता है, उसे अक्सर घटना के लिए पूरी तरह से नहीं तो आंशिक रूप से जिम्मेदार माना जाता है। आख़िर वह रुका क्यों? अपने प्रतिशोध पर ध्यान केंद्रित करने वाले तर्कहीन दिमाग तर्कसंगत निर्णय नहीं लेते हैं, खासकर जब इसमें शामिल व्यक्ति नफरत करने वाले अल्पसंख्यक वर्ग से होता है। सावधानी बरतने वाली बात यह होती कि घायल व्यक्ति को सराय के दरवाजे पर छोड़ दिया जाता और गायब हो जाता, ऐसी स्थिति में सामरी पूरी तरह सुरक्षित हो जाता। लेकिन जब वह उस आदमी की देखभाल के लिए रात भर सराय में रुके और वापस लौटने का वादा किया, तो गुमनाम रहना संभव नहीं था। उसके साहस का पहली बार प्रदर्शन तब हुआ जब वह रेगिस्तान में रुका (क्योंकि लुटेरे अभी भी उस क्षेत्र में थे)। लेकिन उनकी असली बहादुरी सराय में करुणा के इस अंतिम कार्य में दिखाई देती है। हालाँकि, बात उसके साहस की नहीं है, बल्कि वह कीमत है जो वह यीशु की तरह, करुणा के अपने कार्य को पूरा करने के लिए चुकाने को तैयार है। यह कीमत वह अंतिम दृश्य में चुकाना जारी रखता है।

दृश्य ७: अंतिम भुगतान। अगले दिन, जब उसे अपनी यात्रा फिर से शुरू करने की ज़रूरत पड़ी, तो उसने दो दीनार या एक दिहाड़ी मजदूर की सामान्य दैनिक मज़दूरी निकाली (देखें मती २०:२), और उन्हें सराय के मालिक को दे दिया। “उसका ध्यान रखना।” उन्होंने कहा, “और जब मैं लौटूंगा (बिल्कुल यीशु की तरह), तो तुम्हारा जो भी अतिरिक्त खर्च होगा, मैं तुम्हें प्रतिपूर्ति करूंगा” (लूका १०:३५)। घायल आदमी के पास पैसे नहीं थे। यदि वह जाने पर बिल का भुगतान नहीं कर पाता, तो उसे कर्ज़ के लिए गिरफ्तार कर लिया जाता। पहली शताब्दी में सराय मालिकों की प्रतिष्ठा बहुत ख़राब थी, और यहूदी सरायों की स्थिति अन्यजातियों की तुलना में बेहतर नहीं थी। यदि सामरी ने अपने अंतिम बिल का भुगतान करने की प्रतिज्ञा नहीं की, चाहे वह कुछ भी हो (बिल्कुल हमारी तरह), तो घायल व्यक्ति को देनदार की जेल में भेज दिया जाएगा। सामरी एक अज्ञात अजनबी है। फिर भी, समय, प्रयास, धन और व्यक्तिगत खतरे की लागत के बावजूद, वह जरूरतमंद व्यक्ति के प्रति अप्रत्याशित प्रेम का खुलकर प्रदर्शन करता है। इसी प्रकार का निःस्वार्थ प्रेम हम ईसा मसीह के जीवन में देखते हैं।

भाषण छह (यीशु): अंत में, प्रभु ने पूछा: आपके अनुसार इन तीनों में से कौन उस आदमी का पड़ोसी था जो लुटेरों के हाथों में पड़ गया था (लूका १०:३६)?

भाषण सात (वकील): वकील, शायद दृष्टांत की भावना से प्रेरित होकर, मुद्दे से बच नहीं सका। तोराह के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया, “जिसने उस पर दया की।” वह सामरी

Gw – अच्छे सामरी का दृष्टान्त लूका १०:२५-३७ | 11

शब्द भी नहीं बोल सका।

भाषण आठ (यीशु): यीशु ने उससे कहा: जाओ और वैसा ही करो (लूका १०:३७)। भाषणों के दूसरे दौर में हम जो देखते हैं वह मसीहा टोरा के प्रश्न में विशेषज्ञ को नया आकार दे रहा है। वह वकील को कोई सूची नहीं देगा। प्रभु ने उसे यह बताने से इंकार कर दिया कि उसका पड़ोसी कौन है और कौन नहीं। बल्कि, असली सवाल यह नहीं है कि मेरा पड़ोसी कौन है, बल्कि यह है कि, “मुझे किसका पड़ोसी बनना चाहिए?” यही वह प्रश्न है जिसका उत्तर यीशु ने दिया।

यह दृष्टांत अच्छे कार्यों की सामान्य चेतावनी नहीं है, बल्कि खुद को सही ठहराने की इच्छा के बारे में वकील के सवाल का जवाब है (लूका १०:२९)। प्रश्नों और उत्तरों का पहला दौर यीशु के वकील से यह कहने के साथ समाप्त हुआ: ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे (लूका १०:२८)। दूसरा दौर मसीह द्वारा टोरा के विशेषज्ञ से यह कहने के साथ समाप्त होता है: जाओ और वैसा ही करो (लूका १०:३७)। लेकिन मुश्किल यह है कि ये काम कौन कर पाता है? उस ऊँचे, नहीं, असंभव मानक को कौन पूरा कर सकता है? इसलिए, बातचीत का प्रत्येक दौर एक ही निष्कर्ष पर समाप्त होता है। अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? मैं खुद को सही ठहराने के लिए क्या कर सकता हूं? हम जिस एकमात्र निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं वह यह है: ये चीजें मुझसे परे हैं। स्पष्ट रूप से मैं खुद को सही नहीं ठहरा सकता, लेकिन जो लोगों के लिए असंभव है वह परमेश्वर के साथ संभव है (लूका १८:२७), क्योंकि उसने कीमत चुकाई है।